

# मिथिला में वैष्णव भक्ति आंदोलन: उद्भव एवं विकास

Dr. Kumari Nilu\*

L.M.N.U. Darbhanga

**शोध सार:-** बिहार की मिथिला भारत में अपनी समृद्ध सामाजिक, सांस्कृतिक इतिहास के लिए प्रचलित है। मध्यकाल में बिहार की चिंतनधारा पर वैष्णव धर्म का पूरा प्रभाव पड़ा। चंदेश्वर द्वारा संकलित कृत्यरत्नाकर से यह स्पष्ट होता है कि मिथिला में 13वीं तथा 14 वीं सदियों में लोगों के उपास्य देवता थे विष्णु हरि तथा शिव। बिहार में वैष्णव धर्म के विकास के दृष्टिकोण से मिथिला प्रदेश प्रमुख है। यह वहीं क्षेत्र है जहाँ विद्यापति ने गोरक्षविजय, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, उमापति ने परिजातहरण की रचना की। मिथिला प्रदेश में वैष्णव प्रभाव के सामाजिक एवं राजनीतिक कारण हैं।

-----X-----

## प्रस्तावना:-

मिथिला प्राचीन काल से ही कला-संस्कृति अध्यात्म, दर्शन, विद्या, शौर्य और अन्य सभी मानवोचित गुणों का केन्द्र रहा है। प्राचीन काल से आज तक देश के इतिहास के हर मोड़, हर अध्याय पर इसका प्रमुख स्थान रहा है। राजतंत्र से लेकर दर्शन और अध्यात्म तक में बिहार का जो योगदान भारत की संस्कृति, कला और अन्य क्षेत्रों के विकास में रहा है उसका भारतीय इतिहास में ऊँचा स्थान है।

“बिहार का इतिहास क्रमबद्ध विकास का इतिहास रहा है। प्राचीन परम्पराओं में सुरक्षित कथाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मनु के पुत्र नबनेदिष्ठ ने बिहारी में आर्य राजवंश की स्थापना की थी। उस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक विशाल था और उसने ही वैशाली की स्थापना की थी। उस वंश का पुरोहित अंगिश गोत्र का था। उसी प्रकार माधव विदेश ने मिथिला में आर्य राजवंश का विस्तार किया। राजा अंग के नेतृत्व में अंग राज्य की स्थापना हुई। मगध बहुत दिनों तक आर्यों के अधिपत्य से मुक्त रहा। परन्तु यहाँ यह स्मरण रखना होगा कि मगध प्राचीन काल ब्राह्मण सभ्यता का प्रधान केन्द्र था”[1]

प्राचीन भारत में सभ्यता के चार प्रधान केन्द्र थे मिथिला, वैशाली, अंग और मगध।

बिहार को गंगा की धारा दो भौगोलिक क्षेत्रों में अलग करती है उत्तर एवं दक्षिण बिहार। वैशाली गणराज्य, विदेश राज्य, मल्लराष्ट्र और लिच्छवी गणराज्य उत्तर बिहार में वही दक्षिण बिहार में कुरु, अंग और मगध का प्रभुत्व केन्द्र था।

बिहार के नाम का उल्लेख प्राचीन काल में ही भी दिखाई नहीं पड़ता। भौगोलिक रूप में ऊपर के क्षेत्रों को मिलाकर वर्तमान बिहार प्रांत का निर्माण हुआ। बौद्ध बिहारों की अधिकता होने के कारण मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इन क्षेत्रों का नाम “बिहार” रखा, जो आगे चलकर बिहार नाम से प्रचलित हो गया। दो हजार वर्षों तक प्राचीन मगध का इतिहास संपूर्ण भारत का इतिहास रहा। संस्कृति और प्राचीन भारतीय इतिहास की अनमोल धरोहर आज भी बिहार अपने में समाहित किये हुये हैं। विम्बिसार ने पूरे बिहार को एक सूत्र को पिरोने का प्रयास किया तो उसे मजबूति अजातरात्रु ने प्रदान की। महापद्यनन्द के काल में मगध का लोहा सभी मानते थे तथा इसकी राजधानी पाटलीपुत्र भारत का प्रमुख नगर माना जाता था, इसी काल में मगध के राजा और प्रजा का अनुकरण करने में लोग अपने को गौरवान्वित महसूस करते थे। वीरता एवं पराक्रम में मगध का दबदबा था तो अध्यात्म ज्ञान में मिथिला का अहम स्थान था।

बिहार का इतिहास भारत में सबसे विविध में से एक है। प्राचीन बिहार जो कि मगध के रूप में जाना जाता था, 2000 वर्षों तक भारत में शिक्षा, संस्कृति, भक्ति और सत्ता का केन्द्र था।

भारत के पहले साम्राज्य मौर्य साम्राज्य के साथ ही दुनिया की सबसे बड़ी शांतिवादी धर्म बौद्ध धर्म भी बिहार से पैदा हुई। विशेषकर मौर्य और गुप्त राजवंशों के तहत मगध साम्राज्य दक्षिण एशिया के एकीकृत बड़े हिस्से के नीचे एक केन्द्रीय शासन थी जो कि पहले पाटलिपुत्र के रूप में जाना जाता था तथा इसकी राजधानी पटना थी, उस समय इतिहास की

प्राचीन और शास्त्रीय अवधि के दौरान भारतीय सभ्यता का एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक केन्द्र था बिहार। धार्मिक महाकाल्यों के बाहर लिखा प्राचीन भारतीय पाठ में से कई प्राचीन बिहार में लिखा गया था।

### वैष्णव भक्ति: संक्षिप्त परिचय:-

भक्तिकाल की सगुण धारा के अंतर्गत एक ऐसी शाखा थी जिसने सम्पूर्ण भारत की विचारधाराओं को प्रभावित किया। विष्णु आलोचित पुराणों में प्रमुख देवता के रूप में है। वायु पुराण और बहममांड पुराणों में उन्हें विश्वेश प्रभु तथा सभी लोगों के कर्ता की अवधि दी गयी है।

“विश्वेशो लोककृदेवः.....” 2

“ प्रभुविष्णु दिवाकरः.....” 3

भारतीय तत्त्ववेत्ताओं ने भक्ति के महात्म को समझा। विविध देवोपासनाओं के फलस्वरूप भक्ति संप्रदाओं का जन्म हुआ। समन्वयवादी मनीदियों ने सबका सम्मान किया, परंतु वैष्णव भक्ति में कुछ ऐसे लोकपयोगी तत्त्व हैं, जिनके कारण इसका सर्वाधिक प्रसार हुआ। उन साधकों ने वैष्णव भक्ति में साधना का सम्न्वय किया। जिससे भक्ति पाठ और भी प्रशस्त हुआ। अब भागवत भक्ति ही परम पुरुषार्थ समझी जाने लगी। भक्ति के परिवर्ती विकास पर प्रो० विल्सन ने इसे विभिन्न संप्रदाओं के गुरुओं द्वारा अपनी प्रतिष्ठा के परिणाम स्वरूप दृष्टि एवं प्रचारित बताया है।[4]

ऋग्वेद में अनेक अर्थों को अपने में अनुस्थूत करने के बावजूद ‘विष्णु’ शब्द का प्रयोग एक महान शिक्त के रूप में हुआ है। यस्क ने रश्मियों के व्याप्त होने के कारण सूर्य को विष्णु कहा है। जिस विष्णु प्रताप से वृष्टि होती है साथ ही गायों को दुध होता है उसका कालांतर में गोपवेश धारियों कृष्णारव्य विष्णु होना कल्पना गामी माना जाता है, विष्णु ही यजमान तथा देवगणों के लिए ब्रज प्राप्त कराने वाला होने से ब्रह्मन्दन जनवल्लभ हो सकता है।[6] ‘विष्णु को कहीं इन्द्र, इन्द्र की सखा कहीं अग्नि बताया गया है।

इस तरह विविध रूपों एवं नामों में उपासना का आधार होने पर भी वैदिक ऋषियों को एक परम सत्ता की आराधना अभीष्ट थी तो परिवर्ती वैष्णव भक्ति के रूप में दिखाई पड़ती है। वैष्णव धर्म में ‘अनुग्रह या प्रसाद’ की बड़ी महिमा गायी गई है। श्रीमदभागवत महापुराण के ‘पोषण तदनुग्रह’ के आधार पर ही वल्लभचार्य की पुष्टि मार्गीय भक्ति आधारित है। इनके अनुसार भक्ति की प्राप्ति केवल भागवत कृपा से होती है।[8]

वैष्णव धर्म या वैष्णव संप्रदाय का प्राचीन नाम भागवत धर्म या पंचरात्र मत है। इस संप्रदाय के प्रधान उपास्य देव वासुदेव है, जिन्हें ज्ञान, भक्ति बल, वीर्य, एश्वर्य और तेज इन छः गुणों के कारण भगवन या भगत कहा गया है।

“ज्ञान शिक्त बलैश्वर्य वीर्य तेजां स्त्रिशेषतः।

भगवच्छवद वाच्यानि बिना हर्यगुर्णादियीः।।9

महाभारत के अनुसार चारों वेदों और संखई योग के समावेश के कारण इसे ‘पांचरात्र’ कहते हैं। वैष्णव भक्ति के प्रचार में इसका प्रमुख स्थान है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने विष्णु और वासुदेव की एकता तथा वासुदेव भक्ति का प्रारंभ महाभारत काल में ही सिद्ध किया है।[10] महाभारत के शांतिपर्व में विष्णु को वासुदेव कहा गया है। उपनिषदों पुराणों विष्णु पुराण, वामन, वराह, नारद, पदम, मत्स्य, ब्रह्मवैवर्त) के पश्चात श्रीमदभागवत में विष्णु का उल्लेख हुआ है इसमें विष्णु के अन्य स्वरूपों एवं अवतारों का तो वर्णन किया है गया है, भगवन के श्रीकृष्ण अवतार की विविध लीलाओं का वर्णन पर्याप्त रूप में किया गया है। श्रीमदभागवत के द्वारा ही सम्पूर्ण भारत वर्ष में वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ। परवर्ती सभी वैष्णव संप्रदायों का आधार ग्रन्थ यही रहा है। विष्णु के अवतारों का विस्तृत वर्णन भागवत में मिलता है।[11] भगवान का लीला-वैचित्र्य जनता इतना दुरुह है कि सामान्य लोग मोहित हो जाते हैं। यही कारण भी है कि वैष्णव धर्म का इतना व्यापक प्रसार हो सका।

विजयेन्द्र स्नातक ने अपने ग्रन्थ राधावल्लभ संप्रदाय सिद्धांत और साहित्य, में कहा है “वैष्णव धर्म के विकास और प्रसार में पुराणों का सर्वाधिक योगदान रहा है। वैष्णव संप्रदायों के परिवर्तन में जिन सिद्धांतों को स्वीकार किया गया उनमें से अधिकांश का आधार पुराण-साहित्य ही है। उदाहरणार्थ चतुः संप्रदाय के अतिरिक्त श्री कृष्ण चैतन्य का ‘गौड़ीय संप्रदाय’ श्री वल्लभ संप्रदाय या पुष्टिमार्ग और हितहरिवंश का ‘राधा वल्लभ संप्रदाय’ मुख्यतः श्रीमदभागवत और ब्रह्मवैवर्त पुराण में प्रतिपादित भक्ति पद्धति और राधाकृष्ण स्वरूप को लेकर आगे बढ़े हैं।[12]

कृष्ण की उपासना का साक्ष्य गुप्त युग में भी मिलता है साथ ही विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त प्राचीन कृष्ण की मूर्तियों से ज्ञात होता है कि कृष्ण की उपासना अत्यंत प्राचीन काल में चलती आ रही है।[13] लोकमानस में कृष्ण अलग-अलग उपनामों में व्याप्त थे। मध्यकाल में उत्पन्न भक्ति आंदोलन की सगुण शाखा में कृष्णकथा का विस्तार देखा जा सकता है। विष्णु के

अवतारों में लोक रक्षा तथा लोक रंजक दृष्टिकोण से राम और कृष्ण की भक्ति का सर्वाधिक विस्तार हुआ। कृष्ण विष्णु के पूर्ण कला के अवतार कहे जाते हैं।

वैष्णव भक्ति को प्रचारित प्रसारित करने वाले आचार्य शंकराचार्य के अद्वैत सिद्धांत के विरुद्ध अपने दार्शनिक तथा व्यवहारिक विचार व्यक्त किया। उनकी विचारधारा को स्वीकार न करने वालों में रामानुजाचार्य निवंकचार्य, माध्वाचार्य, विष्णुस्वामी एवं वल्लभाचार्य ने भक्ति के लिए नवीन मार्ग खोजा। भक्ति के क्षेत्र में इन आचार्यों की देन बहुमूल्य है क्योंकि विष्णु ने अवतारी रूप राम और कृष्णों को इन्होंने भक्ति का उपास्थ देव बना दिया। मध्यकालीन भक्ति का जो रूप संस्कृत और भारतीय भाषाओं में विकसित हुआ उसका श्रेय इन्हीं आचार्यों को है।

### मिथिला में वैष्णव आंदोलन उद्भव एवं विकास एवं विद्यापति को पृष्ठभूमि:-

बिहार में वैष्णवधारा के विकास का इतिहास गुप्त वंश से जुड़ा है। गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के पालक थे। अतएव परमभागवत पदवी से विभूषित किए गए थे। उनकी स्वर्ण मुद्राओं पर विष्णु की भार्या लक्ष्मी तथा वाहन गरुड़ की आकृति अत्यंत सुंदर ढंग से खुदी है। पौराणिक साहित्य के प्रभाव से गुप्त युग में विष्णु के दल अवतारों की कल्पना समाज में आर्या तथा कलाकारों ने उनकी प्रतिमाएँ तैयार की। सबसे विचित्र बात तो यह है कि बिहार वज्रयान शाखा का गढ़ होते हुए भी वैष्णव मत के प्रवाह में डूब गया था। पाल नरेशों का युग तंत्रयान का मुख्य काल माना जाता है, परन्तु इस समय में भी वैष्णव मत का प्रवाह अक्षय बना रहा। परम सौगात पाल नरेश धर्मपाल ने भी वैष्णव मंदिर के लिए दान दिया था। इसी का प्रभाव है कि मंत्रमान की अंतिम शाखा सहजयान "वैष्णव सचहिजना" के नाम से प्रसिद्ध हुई जिसकी परंपरा में हम चैतन्य महाप्रभु को पाते हैं।

मध्यकाल में बिहार की चिंतनधारा पर वैष्णव धर्म का पूरा प्रभाव पड़ा। चंद्रेश्वर द्वारा संकलित कृत्यरत्नाकर से यह स्पष्ट होता है कि मिथिला में 13वीं तथा 14वीं सदियों में लोगों के उपास्थ देवता थे। विष्णु, हरि तथा शिव। पौराणिक तथ्यों के उद्धरण से चंद्रेश्वर महीने की एकादशी तिथि अर्थात् शयन एकादशी तथा उत्थान एकादशी का पालन हिंदुओं का धर्म है। इसी ग्रन्थ में जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्ण के जन्म दिवस के पालन की विधियों का विशद विवरण है। विद्यापति के पिता के चाचा ने, जो चंद्रेश्वर के वंशधरों में एक थे, एक वैष्णव ग्रन्थ की रचना की जिसका नाम गो विन्द मनसोल्लास है। कामेश्वर वंश

के यज्ञधर ने जयदेव की अमरकृति गीतगोविंदन की टीका लिखी थी।[14]

बिहार में वैष्णव धर्म के विकास के दृष्टिकोण से बिहार का मिथिला प्रदेश प्रमुख है। यह वही क्षेत्र है जहाँ विद्यापति ने गोरक्षविजय, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, उमापति ने परिजातहरण की रचना की। मिथिला प्रदेश में वैष्णव प्रभाव के सामाजिक एवं राजनीतिक कारण हैं।

“हिमालय की तराई और पुण्योत्तया भागीदारी के बीच स्थित इस छोटे से प्रदेश का आज यद्यपि राजनैतिक भू-भाग के दृष्टिकोण से कोई अस्तित्व नहीं दिखाई पड़ता किन्तु अपनी आंचलिक विशेषताओं के साथ आज भी यहाँ के निवासी एक स्वतंत्र सांस्कृतिक एवं सामाजिक परंपरा को अपने जीवन के बीच संजोये दिखाई पड़ते हैं और “मैथिल” इस नाम से जाने जाते हैं। इस तथ्य का मूल कारण अति प्राचीनकाल में प्रतिष्ठित मिथिला जनपद तथा उसकी दीर्घकालीन सांस्कृतिक परंपरा है।”[15]

कर्णाटवंशी राजा नान्यदेव के समय (1097.1225) मिथिला और मोरग मधेस में एक प्रकार का नाच प्रचलित था। नान्यदेव स्वयं भरत के नाट्यशास्त्र के टीकाकार (सरस्वती हृदयालंकार) और ग्रंथमहार्णव के रचयिता थे। उन्होंने 108 राग-रागिनियों का उल्लेख हरीसिंहदेव, ज्योतिरीश्वर (वर्णरत्नाकर), घनश्याम (श्री हस्तमुक्तावली), जगज्योतिर्मल्ल (संगीत चिंतमणि) आदि का योगदान उल्लेखनीय है। 'वर्णरत्नाकर' कर्णाटकालीन मिथिला समाज का सांस्कृतिक दर्पण है।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. निवेदिता, 'द ब्रत्सास' "पृ०" 25
2. वायु पुराण "पृ०" 51/18
3. ब्रह्मांड पुराण, 21.22.18 पृ०.16
4. विल्सन, एच एच, "हिन्दु रिलिजियस", "पृ०" 232
5. अन्य यद विषितों भक्ति तब विष्णुगर्वती 12/16
6. शर्मा, रामनरेश 'हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका, प्राक्थकरण, "पृ०" 6
7. काणे, भालुयम ऑफ स्टडीज इन आइडियोलॉजी प्रोजेन्ट टॉकाणे, पृ० 90

8. श्रीमदभागवत महापुराण-02.10.14
9. महाभारत, शान्तपर्व, अध्याय 336
10. शुल्क रामचन्द्र, सूरदास भक्ति का विकास, "पृ0" 263
11. उपाध्याय, बलदेव, भागवत संप्रदाय, "पृ0" 167
12. स्नातक, विजमेन्द्र, राधा वल्लभ संप्रदाय: सिद्धांत और साहित्य, "पृ0" 135
13. जायसवाल, सु बीरा, वैष्णव धर्म का उद्भव और विकास "पृ0" 70
14. प्रसाद, ओमप्रकाश, 'बिहार एक ऐतिहासिक अध्ययन, "पृ0" 489
15. झा, डॉ. प्रतपनारायण, "मैथिली नाटक का उद्भव और विकास, "पृ0" 14

---

**Corresponding Author**

**Dr. Kumari Nilu\***

L.M.N.U. Darbhanga